P. R. No.: DL(S)-17/3082/2009-11
Rgn. No.: DELHIN/2000/2473

-पूज्यगुरूदेव जी के साथ आशीर्वाद-मुद्रा फोटो में प्रवर्तिनी साध्वीश्री मंजुलाश्रीजी महाराज, सौरभमुनि, डॉ. सोहनवीर सिंह, श्री अरूण तिवारी, डॉ. हरप्रीत एवं अन्य विदेशी श्रद्धालु।

-पूज्य गुरूदेव आचार्यश्री रूपचन्द्र जी महाराज के मिशन की एक शाखा योग, आयुर्वेद एवं नेचरोपेथी के लिए समर्पित-सेवाधाम में साध्वी समताश्री जी के साथ स्वास्थ्य परिचर्चा में भाग लेते हुए युक्रेन से आये हुए जिज्ञासु।

प्रकाशक व मुद्रक : श्री अरुण तिवारी, मानव मंदिर मिशन ट्रष्ट (रजि.)
के.एच.–57 जैन आश्रम, रिंग रोड़, सराय काले खाँ, इंडियन ऑयल पेट्रोल पम्प के पीछे, पो. बो.–3240, नई दिल्ली–110013, आई. जी. प्रिन्टर्स 104 (DSIDC) ओखला फेस–1 से मुद्रित।

संपादिका : श्रीमती निर्मला पुगलिया

कवर पेज सहित
36 पृष्ठ

मूल्य 5.00 रूपये
फरवरी, 2012

रूपरेखा

जीवन मूल्यों की प्रतिनिधि मासिक पत्रिका

-पूज्य गुरूदेव आचार्यश्री रूपचन्द्र जी महाराज से ध्यान और अध्यात्म के गूढ़-रहस्यों पर मार्ग-दर्शन प्राप्त करते हुए युक्रेन और मास्को से आया श्रद्धालुओं का एक समूह। इसी तरह हजारों विदेशी पूज्य गुरूदेव से ध्यानयोग, नवकार मंत्र और अन्य अध्यात्मिक मंत्र सीखकर निरन्तर साधना के मार्ग पर अग्रसर हैं।

-इस अध्यात्म चर्चा में पूज्य गुरूदेव जी के साथ संघ प्रवर्तिनी साध्वीश्री मंजुलाश्री जी एवं सौरभ मुनि जी। और पूज्यवर के मिशन को विदेशों में विस्तार दे रहे दो शिष्य डॉ. सोहनवीर एवं डॉ. हरप्रीत।

रूपरेखा

जीवन मूल्यों की प्रतिनिधि मासिक पत्रिका

वर्ष : 12 अंक : 02 फरवरी, 2012

: मार्गदर्शन :
पूज्या प्रवर्तिनी साध्वी मंजुलाश्री जी

: संयोजना :
साध्वी वसुमती
साध्वी पद्मश्री

: परामर्शक :
श्रीमती मंजुबाई जैन

: सम्पादक :
श्रीमती निर्मला पुगलिया

: व्यवस्थापक :
श्री अरूण तिवारी

वार्षिक शुल्क : 60 रुपये
आजीवन शुल्क : 1100 रुपये

: प्रकाशक :
मानव मंदिर मिशन ट्रस्ट (रजि.)
पोस्ट बॉक्स नं. : 3240
सराय काले खाँ बस टर्मिनल के सामने, नई दिल्ली - 110013
फोन नं.: 26315530, 26821348
Website: www.manavmandir.info
E-mail: contact@manavmandir.info

इस अंक में

01. आर्ष वाणी - 5
02. बोध कथा - 5
03. शाश्वत स्वर - 6
04. गुरूदेव की कलम से - 7
05. चिंतन-चिरंतन - 16
06 गीतिका - 19
07. स्वास्थ्य - 20
08. गजल - 21
09. चिंतन - 22
10. चुटकुले - 23
11. बोलें-तारे - 24
12. समाचार दर्शन - 26
13. संवेदना समाचार - 28
14. झलकियां - 30

रूपरेखा-संरक्षक गण

श्री वीरेन्द्र भाई भारती बेन कोठारी, ह्युष्टन, अमेरिका
डॉ. प्रवीण नीरज जैन, सेनु फ्रेंसिस्को
डॉ. अंजना आशुतोष रस्तोगी, टेक्सास
डॉ. कैलाश सुनीता सिंघवी, न्यूयार्क
श्री शैलेश उर्वशी पटेल, सिनसिनाटी
श्री प्रमोद वीणा जवेरी, सिनसिनाटी
श्री महेन्द्र सिंह सुनील कुमार डागा, बैंकाक
श्री सुरेश सुरेखा आबड़, शिकागो
श्री नरसिंहदास विजय कुमार बंसल, लुधियाना
श्री कालू राम जतन लाल बरड़िया, सरदार शहर
श्री अमरनाथ शकुन्तला देवी, अहमदगढ़ वाले, बरेली
श्री कालूराम गुलाब चन्द बरड़िया, सूरत
श्री जयचन्द लाल चंपालाल सिंघी, सरदार शहर
श्री त्रिलोक चन्द नरपत सिंह दूगड़, लाडनूं
श्री भंवरलाल उम्मेद सिंह शैलेन्द्र सुराना, दिल्ली
श्रीमती कमला बाई धर्मपत्नी स्व. श्री मांगेराम अग्रवाल, दिल्ली
श्री प्रेमचन्द ओमप्रकाश जैन उत्तमनगर, दिल्ली
श्रीमती मंगली देवी बुच्चा धर्मपत्नी स्व. शुभकरण बुच्चा, सूरत
श्री पी.के. जैन, लॉर्ड महावीरा स्कूल, नोएडा
श्री द्वारका प्रसाद पतराम, राजली वाले, हिसार
श्री हरबंसलाल ललित मोहन मित्तल, मोगा, पंजाब
श्री पुरुषोत्तमदास बाबा गोयल, सुनाम, पंजाब
श्री विनोद कुमार सुपुत्र श्री बीरबल दास सिंगला,
श्री अशोक कुमार सुनीता चोरड़िया, जयपुर
श्री सुरेश कुमार विनय कुमार अग्रवाल, चंडीगढ़
श्री देवकिशन मून्दडा विराटनगर नेपाल
श्री दिनेश नवीन बंसल सुपुत्र
श्री सीता राम बंसल (सीसवालिया) पंचकूला
श्री हरीश अलका सिंगला लुधियाना पंजाब
डॉ. अशोक कृष्णा जैन, लॉस एंजिलिस
श्री केवल आशा जैन, टेम्पल, टेक्सास
श्री उदयचन्द राजीव डागा, ह्युष्टन
श्री हेमेन्द्र, दक्षा पटेल न्यूजर्सी
श्री प्रवीण लता मेहत्ता ह्युष्टन
श्री अमृत किरण नाहटा, कनाडा
श्री गिरीश सुधा मेहता, बोस्टन
श्री राधेश्याम सावित्री देवी हिसार
श्री मनसुख भाई तारावेन मेहता, राजकोट
श्रीमती एवं श्री ओमप्रकाश बंसल, मुक्सर
डॉ. एस. आर. कांकरिया, मुम्बई
श्री कमलसिंह-विमलसिंह बैद, लाडनूं
श्रीमती स्वराज एरन, सुनाम
श्रीमती चंपाबाई भंसाली, जोधपुर
श्रीमती कमलेश रानी गोयल, फरीदाबाद
श्री जगजोत प्रसाद जैन कागजी, दिल्ली
डॉ. एस.पी. जैन अलका जैन, नोएडा
श्री राजकुमार कांतारानी गर्ग, अहमदगढ़
श्री प्रेम चंद जिया लाल जैन, उत्तमनगर
श्री देवराज सरोजबाला, हिसार
श्री राजेन्द्र कुमार केडिया, हिसार
श्री धर्मचन्द रवीन्द्र जैन, फतेहाबाद
श्री रमेश उषा जैन, नोएडा
श्री दयाचंद शशि जैन, नोएडा
श्री प्रेमचन्द रामनिवास जैन, मुआने वाले
श्री संपतराय दसानी, कोलकाता
लाला लाजपत राय, जिन्दल, संगरूर
श्री आदीश कुमार जी जैन, दिल्ली
मास्टर श्री बैजनाथ हरीप्रकाश जैन, हिसार
श्री केवल कृष्ण बंसल, पंचकूला
श्री सुरनेश कुमार सिंगला, सुनाम, पंजाब
श्री बुधमल राजकरण, तेजकरण सिंघी, सरदार शहर

आर्ष वाणी

श्रुति र्विभिन्नाः स्मृतयो विभिन्नाः, नैको मुनियस्य वचः प्रमाणम्।
धर्मस्य तत्त्वंनिहितं गुहायां, महाजनो येन गतः स पंथा।।

-महाभारत

श्रुतियां विभिन्न है। स्मृतियां विभिन्न हैं। एक भी मुनि ऐसा नहीं जिसका वचन प्रमाण माना जाए। धर्म का तत्त्व रहस्य गुफाओं में विलुप्त है। महापुरूष जिन रास्तों से गए हैं वही सच्चा पंथ है।

बोध-कथा

स्वास्थ्य का रहस्य

राजा चंद्रगुप्त तीर्थाटन के लिए काशी जा रहे थे। उनके साथ उनके सेनापति, मंत्री और राजदरबार के अन्य लोग भी थे। रात होने पर एक जगह पड़ाव डाला गया। चंद्रगुप्त ने किसी भी नगर के भव्य प्रसाद या भवन में ठहरने की अपेक्षा वन में रुकना उचित समझा। वह आम के पेड़ों से भरे एक जंगल में ठहरे। भोजन विश्राम आदि की व्यवस्था की गई। बीच में कुछ नृत्य आदि के कार्यक्रम भी हुए। संयोगवश उसी रात चंद्रगुप्त अचानक बीमार हो गए। कुशल वैद्यों के उपचार ने उन्हें स्वस्थ तो कर दिया पर वह चिंता में डूब गए। वह विचार करने लगे कि आखिर वन और उसके आसपास रहने वाले आश्रमवासी और गांव के लोग किस तरह रहते होंगे। उनके उपचार के लिए उन्होंने एक वैद्य को उस क्षेत्र में स्थायी रूप से नियुक्त कर दिया। वैद्य के काफी समय रहने के बाद भी जब कोई वनवासी, ग्रामवासी या गुरुकुल में रहने वाले शिष्य अथवा आचार्य अपनी चिकित्सा के लिए नहीं आया तो उकताकर एक दिन वैद्य ने एक आचार्य से कहा, 'लगता है मैं यहां व्यर्थ ही रह रहा हूं। यहां के लोग अस्वस्थ नहीं होते अथवा मेरे पास उपचार कराने में संकोच करते हैं।' आचार्य ने वैद्य की शंका का निवारण करते हुए कहा, 'भविष्य में भी शायद ही कोई आपके पास चिकित्सा के लिए आए क्योंकि यहां का प्रत्येक निवासी श्रम करता है। उसे जब तक भूख परेशान नहीं करती, भोजन नहीं करता। सब यहां अल्पभोजी हैं। जब कुछ भूख शेष रह जाती है तभी खाना बंद कर देते हैं।' आचार्य ने अपना आशय स्पष्ट करते हुए आगे कहा, 'भूख से कम भोजन हो और नीति-नियमों से अर्जित धन से जुटाया हुआ आहार हो। स्वस्थ रहने के लिए परिश्रम करना और पसीना बहाना ही काफी नहीं है बल्कि पवित्र मन भी आवश्यक है। अपवित्र मन वाला व्यक्ति स्वस्थ नहीं रह सकता।' वैद्यराज को वनवासियों के स्वास्थ्य का रहस्य समझ में आ गया।

शाश्वत स्वर

अशांत कर्म की अग्नि बुझा दो, शांति मिलेगी

जीवन में हमेशा यह बात याद रखने की है कि जीव ईश्वर का अंश है। जो गुण ईश्वर में हैं, वही गुण अंश रूप जीव में भी होते है। ईश्वर अविनाशी है, इसलिए कहते हैं कि आत्मा अजर-अमर है। परमात्मा चैतन्य है तो जीव जड़ नहीं है, वह भी चेतन है। परमात्मा अमर है तो जीव भी अमर है।

तुलसीदास जी ने जीव को निर्मल नहीं कहा। उन्होंने भी उसे अ-मल कहा है। निर्मल कहते तो गंदा होने की संभावना रहती, लेकिन उन्होंने अ-मल कहा है। अ-मल का अर्थ यह है जिसमें मल ही नहीं है। जिसके अंदर मल नहीं है, मलिनता नहीं है वह अ-मल।

ईश्वर अंश जीव अविनाशी। चेतन अमल सहज सुखराशि।।

जब परमात्मा में मलिनता नहीं है, तो आत्मा में भी मलिनता संभव नहीं है। जल गंदा होता है, उसे निर्मल करना पड़ता है, मगर आत्मा अमल है, निर्मल नहीं क्योंकि उसमें गंदगी हो ही नहीं सकती, इसलिए अ-मल के आगे कहते हैं कि सहज सुखराशि हैं यानी सुख का खजाना है, इसलिए वह है ही सुखरूप।

यह बात गौर करने की है कि जीव स्वरूप से तो सुखरूप हैं, मगर उनका स्वभाव ऐसा है कि बात बात में दुखी हो जाते हैं। रोते भी हैं और रुलाते भी हैं। अगर ऐसा नहीं होता, तो सुख की खोज के लिए कहीं बाहर भटकने की जरूरत नहीं होती। शांति को कहां ढूंढने की जरूर है? आनंद की खोज बाहर करने की जरूरत ही क्या है? जीव जब है ही सुख स्वरूप।

यह तो ऐसी बात है कि जैसे शक्कर मिठास को, नमक नमकीन और बर्फ शीतलता को ढूंढने निकले। पर सुख और शांति को बाहर खोजने की जरूरत पड़ रही है। ऐसा इसलिए है, क्योंकि हम यानी जीव अपने स्वरूप को ही भूल गया है। इसलिए तो संत कबीर कहते हैं- **मोको कहां ढूंढे रे बंदे, मैं तो तेरे पास रे।**

शांति हमारा स्वरूप है और जो स्वरूप को ढूंढता है वह शांत है। क्रोध आगंतुक है बाहर से आता है। जबकि शांति तो हमारा स्वरूप है चौबीस घंटे क्रोध नहीं किया जा सकता। मगर चौबीस घंटे हम शांत रह सकते हैं। जीव शांति की खोज में भटक रहा है। सुख के पीछे भाग रहा है। यह तो ऐसे ही हुआ जैसे कस्तूरी के लिए मृग दौड़ता है, घास सूंघता फिरता है कि यह सुगंध कहां से आ रही है? जबकि कस्तूरी उसकी नाभि में है। मुझ से अगर कोई पूछे कि हमें शांति चाहिए और शांति के लिए हमें क्या करना चाहिए, तो मैं कहता हूं कि शांति के लिए तुम कुछ न करो, बल्कि जो तुम कर रहे हो वह बंद कर दो। ऐसा करने से अपने आप शांति मिलेगी। पानी को गर्म करना पड़ता है, ठंडा अपने आप हो जाता है। इसलिए हम अपने कर्मों के कारण अशांत हैं। जो अशांत कर्म की अग्नि जल रही है, उसे बुझा दो तो अपने आप मन में शांति का अनुभव होगा।

-प्रस्तुति : निर्मला पुगलिया

गुरुदेव की कलम से

मृत्यु का भय क्यों?

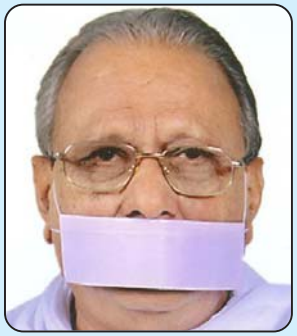

प्रश्न होता है कि जब मृत्यु सुखद है तो आदमी के मन में मृत्यु का भय क्यों होता है, असहाय और निर्बल अवस्था में भी मरने से क्यों घबराता है? इसका प्रमुख कारण मृत्यु के सम्बन्ध में हमारे मन में जमी हुई अवधारणा ही है। हमारे अवचेतन मन में यह अवधारणा जमी होती है कि मृत्यु के समय मनुष्य को महान् पीड़ाओं में से गुजरना पड़ता है। जब शरीर में से आत्म प्रदेश बाहर निकलते हैं, तब उसे एक महान् भयंकर वेदना का अनुभव होता है। शास्त्रों में भी कहा गया है कि **मरण-समा वेयणा णत्थि**- मृत्यु के समान कोई वेदना नहीं है। जब आदमी किसी अति भीषण कष्ट में से गुजरा हो तो उसके मुख से यही निकलता है कि मरण वेदना में से निकल कर आया हूं। मृत्यु के प्रति यह अवधारणा ही उस मृत्यु वेदना का प्रमुख कारण होता है।

जीवन के प्रति अनन्त मोह

मृत्यु भय का दूसरा बड़ा कारण है, जीवन के प्रति अनन्त मोह। भगवान महावीर प्राणी जीवन का विश्लेषण देते हुए कहते हैं- **सव्वे पाणा पियाउया**- सभी प्राणियों को अपना जीवन प्रिय होता है। सब जीना चाहते हैं। मरना कोई नहीं चाहता। चींटी से लेकर हाथी और मनुष्य तक, सब जीवन से चिपके हुए दिखाई देते हैं। वृद्ध और रोगी से रोगी व्यक्ति के मन में भी, मृत्यु के समय जीवन के लिए एक तीव्र छटपटाहट देखी जा सकती है। महावीर इसी छटपटाहट को 'अणन्त मोहे' अनन्त मोह की संज्ञा देते हैं।

आज के मनोविज्ञान में जीने की इस तीव्र अभिलाषा को 'जिजीविषा'- न मरने की इच्छा को, मनुष्य की बुनियादी अन्तः प्रेरणाओं में गिना जाता है। प्रसिद्ध मनोविज्ञान-वेत्ता एरिक वर्न्स मनुष्य के तीन मूलभूत विश्वासों में प्रथम इसी अन्तः प्रेरणा को मानते हैं- Belief in the immorrality of the self अपने अस्तित्व की अमरता में विश्वास। यह विश्वास होना कि या तो मैं मरूं ही नहीं या फिर मर कर भी मैं न मरूं- अमर बन जाऊं। मरने की अनिवार्य घड़ी सामने देख कर भी मृत्यु से डरना उसी जिजीविषा की झलक है। मरने के बाद भी न मरने, जिन्दा रहने की ललक का ही उदाहरण है- स्मारक खड़े करवाना, स्तूप बनवाना, अपने नाम से दान, पुरस्कार, सेवा आदि कार्यों का संचालन करना। इतना ही नहीं, अमरता के इसी प्रयत्न में वह मृत शरीर को भी पुन-जींवित करने की कोशिश

करता है। अमेरिका में आज भी दर्सों मृत शरीरों को पुनः जिलाए जाने की कोशिश में सुरक्षित रखा जा रहा है। ये उन कुबेर-पतियों के मृत शरीर हैं जो पुनर्जीवन पाने की अभिलाषा में अपने पीछे करोड़ों, अरबों की धनराशि वसीयत में छोड़ गए हैं। कहते हैं कि उन मुर्दा शरीरों के रखरखाव एवं पुनः जिलाने के लिए विज्ञान जो प्रयोग कर रहा है, उस पर प्रतिदिन लाखों डालर खर्च हो जाते हैं। शरीर के प्रति मोह की तरह परिवार का मोह भी मृत्यु-भय का बड़ा कारण है। परिवार शरीर का ही विस्तार होता है। इसीलिए शरीर की तरह अपनी सन्तान के प्रति भी तीव्र मोह जुड़ जाता है। वह मोह इतना अनन्त-अनुबन्ध लिए होता है कि बहुत बार व्यक्ति अपने को मृत्यु-मुख में डाल कर भी सन्तान को बचाना चाहता है।

परिवार की तरह धन-वैभव का छूट जाना भी मृत्यु-दुःख का बड़ा कारण है। सम्पत्ति-वैभव को छूटते देख कर वह मन ही मन कातर हो उठता है। उस कातरता-मूढ़ता के कारण न वह शान्ति से जी सकता है, न शान्ति से मर सकता है।

जो दौलत के जितना करीब होता है,
वह भीतर से उतना ही गरीब होत है
तरतीब तो होती ही नहीं जिन्दगी उसकी
उसका मरण भी बेतरतीब होता है।

अज्ञात के प्रति आशंका

मृत्यु-भय का एक कारण अज्ञात के प्रति आशंका भी है। कहां जाऊंगा? मेरा क्या होगा? किन प्राणियों के बीच मुझे रहना होगा? वे लोग कौन होंगे? कैसे होंगे? अज्ञात के प्रति ये आशंकाएं भी मृत्यु भय का बड़ा कारण होती हैं। इसके साथ इस जीवन में जो भी पाप-कुकर्म किए हैं, उनके फल-परिणाम की चिन्ता से भी मन भय से सिहर जाता है। उन पाप-दुष्कर्मों को इस जीवन में, चाहे दूसरों से उसने छुपा भी लिया हो, किन्तु मृत्यु के समय वे सब पाप आंखों के आगे आते हैं। उनके परिणाम की कल्पना से ही मन भयभीत हो उठता है।

मृत्यु एक अनिवार्य घटना

ये ही कुछ कारण हैं कि मनुष्य मृत्यु से भय खाता है जबकि हम अच्छी तरह से जानते हैं कि मृत्यु एक अनिवार्य घटना है। उसको किसी भी स्थिति में टाला नहीं जा सकता। न कोई औषध आदमी को मौत से बचा सकती है, और न कोई अन्तरिक्ष यान में बैठकर मौत से दूर भागा जा सकता है। दूर भागना तो एक और, मौत आने पर ये ही साधन उसके सहयोगी बन जाते हैं।

यूनान की एक लोक-कथा है। ग्रीक का राजकुमार नगर के राज-मार्ग पर घूम रहा था। अचानक उसने मौत को अपनी ओर घूरते देखा कि मौत उसकी ओर उंगली से इशारा

कर रही थी। वह ऊपर से नीचे तक बुरी तरह कांप गया। उल्टे पांव दौड़ कर वह राज महलों में आया और उसने पिताजी से सारी व्यथा-कथा सुनाई।

पिता भी चिंतित हुए। उन्होंने अपने मित्र इन्द्र को बुलाया। अपनी चिंता बताते हुए उसने इन्द्र से सहायता मांगी। इन्द्र ने कहा- एक बार मैं राजकुमार के जीवन की सुरक्षा व्यवस्था तुरंत कर देता हूं। ताकि जब तक मैं धर्मराज से न मिल लूं, तब तक यम के हाथ राजकुमार तक न पहुंच सके। फिर धर्मराज से राजकुमार को जीवन-दान दिलवाने की कोशिश करूंगा।

इन्द्र ने राजकुमार को गरुड़ की पीठ पर बैठाया। वायुवेग से उड़ते हुए गरुड़ ने राजकुमार को कुछ ही क्षणों में वहां से हजारों कोसों दूर काकेशस की पहाड़ियों में पहुंचा दिया। अब इन्द्र निश्चिन्त था कि राजकुमार की खोज में एक बार तो यमराज भी धोखा खा जाएगा। तब तक मैं अपना काम कर लूंगा। दूसरे दिन इन्द्र धर्मराज से मिले। इन्द्र कुछ बोले, इससे पहले ही धर्मराज ने कहा- आपने मेरा काम आसान कर दिया। इसके लिए बहुत-बहुत धन्यवाद। ग्रीक के राजकुमार की मृत्यु काकेशस की पहाड़ियों में होनी थी, पर यमराज उसे लेने गया, तो वह यूनान में था। इसलिए उसे खाली हाथों वापस लौटना पड़ा। तभी आप वहां पहुंचे। आपने राजकुमार को काकेशस की पहाड़ियों में पहुंचा दिया, हमारी उलझन का हल निकल गया।

अब इन्द्र को समझ में आया कि यमराज राजकुमार की ओर अंगुली से इशारा क्यों कर रहा था? और इन्द्र ने यह भी जाना कि जीवन की सुरक्षा के प्रयत्न में उसने अनजाने ही मृत्यु को किस तरह साथ दे दिया है। सारांश यह है कि मौत को न टाला जा सकता है, न धोखा दिया जा सकता है- और न ही उससे बचा जा सकता है, गीता के शब्दों में- **जातस्य ही ध्रुवो मृत्युः, ध्रुवं जन्म मृतस्य च।** जो जन्मा है उसकी मृत्यु निश्चित है। जो मर गया है उसका जन्म निश्चित है। जन्म के साथ मृत्यु जुड़ी हुई है। जन्म लेने के 70 वर्ष बाद, 75 वर्ष बाद अथवा 80-85 वर्ष बाद मृत्यु होती है, ऐसा बिल्कुल नहीं है। मृत्यु तो हर सांस के साथ जुड़ी हुई है। हर सांस में हमें मृत्यु नजदीक ले जाती है। यह बात अलग है, कि हम घटनाओं के स्थूलाकार को देखने के आदी होते हैं। इसलिए प्रतिक्षण घटित होने वाली मृत्यु को देखने वाली आंखें बहुत कम हैं। उस घड़ी को हमें देखना पड़ता है, या फिर हमारे देखने से उस घटना के घटित होने में कोई अन्तर नहीं, इसलिए हमें स्वीकारना हमारी नियति है, मजबूरी है। अगर ऐसा न होता तो मौत को स्वीकारने का प्रश्न ही नहीं उठता।

मृत्यु क्या है?

प्रश्न होता है कि मृत्यु क्या है? जब हृदय की धड़कन बन्द हो जाए, नाड़ी का गति-संचार बन्द हो जाए, श्वास का आना-जाना बन्द हो जाए, मस्तिष्क की क्रियाएं ठप्प हो जाएं, साधारणतया हम उसे मृत्यु कहते हैं। किन्तु मृत्यु के ये बाहरी कारण है। मृत्यु का उसली कारण है चेतना की अर्थ-क्रिया के संचालन में शरीर का असमर्थ होना। श्रीमद्भगवत गीता में कहा गया है-

वासांसि जीर्णानि यथा बिहाय
नवानि गृण्हाति नरोऽपराणि
तथा शरीराणि विहाय जीर्णा
न्यन्यानि संयाति नवानि देही।

जैसे वस्त्र जीर्ण हो जाने पर मनुष्य नए कपड़े धारण करता है, वैसे ही शरीर के जीर्ण होने पर आत्मा नए शरीर को धारण करती है।

शरीर तो मशीन है। जब तक मशीन ठीक ढंग से काम करती है, मालिक उसे काम में लेता है। मशीन बिगड़ जाने पर उसे मिस्त्री से ठीक करवाता है। किन्तु जब वह ठीक नहीं हो पाती है, तब दूसरी मशीन वह ले आता है, ठीक इसी प्रकार जब यह शरीर आत्मा के लिए अक्षम हो जाता है, आत्मा उसे छोड़ कर नया शरीर धारण कर लेती है। यही है जन्म-मरण का कार्य-कारण-भाव। इसमें न रहस्य जैसा कुछ है और न है भय जैसा भी कुछ।

मैं समझ नहीं पाया हूं अब तक यह रहस्य,
दुनिया मरने से यों क्यों घबराती है,
क्यों मरघट का सूनापन चीखा करता है,
जब माटी-माटी से निज ब्याह रचाती है,
फिर माटी तो मिटती भी नहीं कभी भाई,
यह सिर्फ शक्ल की चोली बदला करती है,
संगीत नहीं बदला करता है सरगम का,
केवल गायक की बोली बदला करती है।

मृत्यु से मरता कुछ नहीं है। आत्मा तो अमर है। इसलिए इसके मरने का तो कोई सवाल ही नहीं। शरीर माटी का है, वह माटी में मिल जाता है। मिटने जैसा यहां कुछ भी नहीं है। नए जन्म में वह सिर्फ नई शक्ल धारण कर लेता है। इस प्रकार न आत्मा मरती है, न शरीर मरता है। आत्मा का स्थूल शरीर के साथ संयोग होना जन्म है, वियोग होना मृत्यु है। आत्मा जब शरीर को छोड़ देती है, तब हृदय की धड़कन बन्द होना, श्वास का रुक जाना आदि शारीरिक क्रियाओं का बन्द हो जाना तो स्वाभाविक ही है।

भाइयों के उर्ध्वगमन में बहनों का सहयोग

○ संघ प्रवर्तिनी साध्वी मंजुलाश्री

मगध राज्य के महामात्य शकडाल के दो पुत्र स्थूलिभद्र और श्रीयक तथा यक्षा यक्षदत्ता, भूता भूतदत्ता, सेना, रेणा, वेणा ये सात पुत्रियां थी।

महामात्य के ज्येष्ठ पुत्र स्थूलि-भद्र प्रारम्भ में कोशा वेश्या के प्रेम में थे लेकिन पिता की अकारण अकाल मौत ने उनको भी विरक्त बना दिया। वे आचार्य संभूत विजय जी के पास दीक्षित होकर ज्ञानाराधना में लग गए।

मुनि स्थूलिभद्र की तरह उनकी बहनें भी प्रखर प्रतिभा की धनी थी। यक्षा कठिन से कठिन पद्य एकबार सुनकर याद कर लेती। यक्षा-दत्ता दो बार सुनकर याद रख लेती। भूता तीन बार, भूतदत्ता चार बार, सेना पांच बार, रेणा छह बार, और वेणा सात बार सुनकर कष्ठस्थ कर लेती थी।

इन सातों बहनों का अपने भाइयों को उन्नत बनाने में बड़ा योगदान रहा है। छोटा भाई श्रीयक जिससे तपस्या नहीं होती थी। सम्वत्सरी के दिन उपवास धारण कर तपस्या का अभ्यास कर रहा था। लेकिन क्षुधा ने ऐसा पीड़ित किया कि मनोबल डगमगाने लगा। बार-बार पूछने लगा कि उपवास पूरा होने में कितना समय बाकी है। अब दिन कब निकलेगा आदि। तभी साध्वी यक्षा ने उनका मनोबल दृढ़ किया और किसी तरह उपवास को खण्डित नहीं करने दिया जिसके परिणाम स्वरूप मुनि श्रीयक आराधक और स्वर्ग गामी बने।

बड़े भ्राता स्थूलिभद्र जब आचार्य भद्रबाहु से 10 पूर्वों का ज्ञान सीख कर आए तो मन में शक्ति प्रदर्शन का मनोभाव जाग गया।

पाटलीपुत्र के उद्यान में साध्वी यक्षा आदि सातों बहन भ्राता स्थूलभद्र के दर्शन करने गईं। वहां आचार्य भद्रबाहू विराजमान थे, उन्हें सम्मान वंदना कर वे अपने भाई मुनि स्थूलभद्र के बारे में पूछने लगीं, तब भद्रबाहु ने पार्श्ववर्ती गुफा की तरफ संकेत करते हुए फरमाया- उस जीर्ण-शीर्ण चैत्य में स्थूलिभद्र साधना का अभ्यास कर रहा है। बहनें उस चैत्य की तरफ जाने लगी। दूर से स्थूलभद्र ने बहनों को देखा तो मन में आया कि बहनों को कुछ चमत्कार

दिखाना चाहिए ताकि इनको भी मालूम हो कि भाई कोई विद्या सीखकर आया है। बहने चैत्य में पहुंचे उससे पहले ही स्थूलभद्र ने केसरीसिंह का रूप बना लिया और द्वार पर बैठ गए। बहनें ज्योंही चैत्य में घुसने लगी द्वार पर केसरी सिंह को देख कर घबरा गई और वापस लौट आईं। आचार्य महाराज के पास आकर बोली गुरुदेव? वहां पर तो एक सिंह बैठा है। हमारा भाई नहीं है। लगता है शेर हमारे भाई को खा गया है। आचार्य महाराज ने ज्ञानबल से देखा तो पता चला कि बहनों को अपनी विद्या का चमत्कार दिखाने के लिए मुनि स्थूलिभद्र ने ही शेर का रूप बनाया है, तब भद्रबाहु स्वामी ने बहनों से कहा- साध्वी यक्षा? अब तुम लोग जाओं, वहां तुम्हें तुम्हारा भाई मिलेगा। जो शेर बैठा था वह तुम्हारा भाई था, तुम्हें विद्याओं का चमत्कार दिखाने के लिए ही उसने शेर का रूप बनाया था।

साध्वी यक्षा आदि फिर वहां गईं। इस बार वहां शेर के स्थान पर स्थूलभद्र मुनि विराजमान थे। बहनें भाई को प्रतिबोध देती वे उससे पहले ही प्रतिबुद्ध हो चुके थे। अपनी बहनों की मूक प्रेरणा से ही वे संभल गए। उन्हें अपने विद्या प्रदर्शन पर गहरा अनुताप था। वे उसी क्षण वहां से उठकर आचार्य भद्रबाहु के समीप आए और अपनी भूल का पश्चाताप करते हुए, प्रायश्चित करण के लिए तत्पर हुए, लेकिन इस भूल का मोल उनको इतना भारी चुकाना पड़ा कि दशपूर्वों के आगे की ज्ञान राशि से वंचित रह गए।

अन्तर्दृष्टि

1. जो श्रम नही करता, उसके साथ देवता भी मैत्री नहीं करते।

-ऋग्वेद

2. अपने अहंकार पर विजय पाना ही प्रभु की सेवा है।

-महात्मा गांधी

3. मनुष्य का निर्माण भाग्य नहीं, पुरुषार्थ करता है। गौरव परिश्रम का अनुगामी है। श्रम आत्मा के लिए रसायन का काम करता है। श्रम ही मनुष्य की आत्मा है।

-स्वामी कृष्णानंद

4. प्रत्येक बालक यह संदेश लेकर संसार में आता है कि ईश्वर अभी मनुष्यों से निराश नहीं हुआ है।

-रवींन्द्रनाथ टैगोर

गीतिका

-संघ प्रवर्तिनी साध्वी मंजुलाश्री

आज मैत्री के मधुर स्वर गुन गुनाने दो
शांति सह-अस्तित्व के अब गीत गाने दो
गुन गुनाने दो, हमें अब गुन गुनाने दो।।

ऊंचा कौन, कौन है नीचा, हैं सभी इंसान
मानव मानव के घट घट में, वसता है भगवान। (1)

हिंदू कौन, कौन है मुस्लिम, कौन सिख सरदार
भाई भाई हैं हम सारे, एक खून की धार। (2)

विश्वबंधुता के प्रांगण में, क्या निर्धन धनवान
शिक्षित और अशिक्षित गोरे, काले एक समान। (3)

वैष्णव बौद्ध जैन ये सारे, ऊपर के उपचार
सत्य अहिंसा ही हम सब के, धर्मों का आधार। (4)

जाति धर्म भाषा को लेकर, क्यों होते हम दूर
दिल को दिल से समझ मिलें हम गले अहं को चूर। (5)

समता का साम्राज्य अटल हो, छूआछूत का अंत
शुद्ध विचार पवित्र आचरण से, हो मानव संत। (6)

राहें अलग अलग हैं चाहें, मंजिल सबकी एक
कितने दिन का यहां बसेरा, जीवन जीलें नेक। (7)

तर्ज-जयतु जय...

बसंत-पंचमी

मां सरस्वती का जन्मोत्सव

आया बसंत, आया बसंत,
फूलों पर है छाया बसंत,
मधुमास लाया बसंत,
भवरों और तितलियों का गुंजन,
चहुं ओर बिखराया बसंत,
पक्षियों के कलख की मिठी धुन लाया बसंत,
आया बसंत, आया बसंत।

बसंत पंचमी को श्री पंचमी भी कहते हैं। बसंत पंचमी हरियाली शुरू होने का सूचक है। बसंत का मतलब है, 'ऋतुराज' और पंचमी का मतलब है, 'पांचवा दिन' यानि की बसंत पंचमी यह त्योहार भारतीय पचांग के हिसाब से माघ के महीने के शुक्ल पक्ष के पांचवें दिन आता है।

बसंत पंचमी का यह त्यौहार हिंदू लोग पूरे हर्षोल्लास के साथ मनाते हैं। इस दिन हिंदू लोग मां सरस्वती, जोकि, सुर, कला, ज्ञान और बुद्धिमता की देवी है, की पूजा करते हैं। ऐसा माना जाता है कि इस दिन मां सरस्वती का जन्मदिन है। इस दिन विद्यार्थी मां सरस्वती की पूजा-अर्चना करके उनसे ज्ञान का आशीर्वाद प्राप्त-अर्चना करके उनसे ज्ञान का आशीर्वाद प्राप्त करते हैं। स्कूलों व कॉलेजों में यह दिन मां सरस्वती की पूजा करके मनाया जाता है। बच्चे अपना रोल नं., पेन-पेंसिल माता के पैरों में रखकर अच्छे परिणाम के लिए आशीर्वाद प्राप्त करते हैं।

पंजाब में भी इसका अपना ही एक महत्व है। यहां पर इस त्योहार को बसंत पंचमी के नाम से जाना जाता है। हरियाणा में भी इस त्योहार को पूरे उत्साह से मनाया जाता है। कुछ प्रमुख स्थान जैसे- उड़ीसा, बंगाल, बिहार तथा कुछ प्रमुख देश जैसे- भारत, बांग्लादेश, नेपाल में यह त्योहार विशेष रूप से मां सरस्वती की पूजा करके मनाया जाता है। इसे पाकिस्तान में भी मनाया जाता है। वहां पर इस त्योहार को 'जश्न-ए-बहार' कहा जाता है।

पीला रंग बसंत पंचमी पर प्रमुख रूप से दर्शाया जाता है, क्योंकि ऐसा माना जाता है कि सरसों के फूल इस दिन पूर्ण रूप से खिल जाते हैं और जिसकी वजह से पीला रंग इस दिन अपनी ही एक खास अहमियत रखता है। मां सरस्वती को इसी वजह से इस दिन पीली साड़ी पहनायी जाती है। लोग खाने में पीली चीजें पकाते हैं, पीले वस्त्र पहनते हैं। मां सरस्वती पर पीले फूल चढ़ाते हैं। सरसों के पीले फूल पूरे खेतों को इस तरह से ढक देते हैं कि लगता है कि धरती पर पीला रंग बिखरा हुआ प्रतीत होता है। ऐसा लगता है कि मानो कि खेतों में पीला रंग बिखेर दिया हो। इस दिन पीले चावल बनाने की महत्ता है।

इस दिन स्थान-स्थान पर तरह-तरह के कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। बच्चे मां सरस्वती के मंदिरों में सजाते हैं। इस त्यौहार पर पतंग उड़ाने की भी परंपरा है और रंग-बिरंगी पतंगों से पूरा आकाश रंग-बिरंगा नजर आता है और धरती पीली। यह एक रंगों से भरा त्योहार है। इस त्योहार पर तरह-तरह के मेले अलग-अलग स्थानों पर लगाये जाते हैं, वो भी भिन्न-भिन्न तरीके से। लोग इस दिन सुबह दैनिक कार्य से निवृत्त होकर सूर्य को अर्घ्य देकर गंगा की पूजा करना व मंदिर जाना आदि शुभ माने जाते हैं। इस दिन लोग ब्राह्मणों को भोजन भी करवाते हैं, इससे उनका मानना यह होता है कि उनके पितृ भोजन ग्रहण कर रहे हैं। यह एक राष्ट्रीय त्योहार है। हमें भी यह त्योहार श्रद्धा और परंपरा से मनाना चाहिए।

-प्रस्तुति : किरण तिवारी

गीतिका

○ साध्वी मंजुश्री

दयानिधि द्वार तेरे, मैं खड़ी उद्धार तुम कर दो,
लगाऊँ ध्यान मैं पल पल, शुभ संस्कार तुम भर दो।

कँरू मैं साधना पर हो रही, मुझसे प्रभु स्खलना,
बने मजबूत मन चंचल सुझाओ राह पे चलना,
मिटें सब चाहें मन की, ऐसा शुभ संस्कार तुम भर दो।

भरा रहता अशान्ति से दिमाग कैसे करूँ खाली,
रहे परेशान मन हरदम, पिलाओ शान्ति सुधा प्याली,
रहे मंजू के मन में चिर शान्ति का विस्तार प्रभु कर दो।

तर्ज- ख्यालों में

अध्यात्म

ओम का अनाहतनाद

भाषा के जगत का अंतिम शब्द है ओम (ॐ) और यही अभाषा के जगत का पहला शब्द है, जिसका सरोकार शब्दातीत व अर्थातीत शाश्वत सत्य के प्रतीक से है। वस्तुतः 'ओम' को शब्द कहना भी व्यर्थ है, क्योंकि यह उस 'निशब्द' अदृश्य परम चेतना का नाद है, जहां भाषा तर्क, विचार दर्शन व अन्य बंधनों का जगत अपना अर्थ खो देता है। ओम जगत् और ब्रह्म के बीच का अनाहतनाद है। ओम को किसी धर्म विशेष तक सीमित कर देना अपनी अज्ञानता को ही प्रकट करना है। ओम शब्द किसी धर्म सम्प्रदाय की जागीर नहीं है।

ओम (ॐ) व इस्लाम का अर्द्धचंद्र

इस्लाम के अनुयायी चांद के आधे टुकड़े को सम्मान की दृष्टि से देखते हैं। वस्तुतः चांद का यह टुकड़ा (ॐ) के ही ऊपर का टूटा हुआ हिस्सा है। शब्दों और प्रतीकों के साथ एक सबसे बड़ी समस्या यह है कि समय की सैकड़ों-हजार साल की यात्रा के दौरान वे इतने घिस-पिट जाते हैं, इतनी बुरी तरह कट जाते हैं कि इनके मूल स्वरूप को पहचानना मुश्किल हो जाता है। समय की यात्रा के इस प्रवाह में शब्दों के साथ नयी ध्वनियां जुड़ती हैं, नये शब्द जुड़ते हैं और नये लोग नयी जुबान व ढरे से इनका उपयोग-प्रयोग करते हैं। कदाचित किसी मुसलिम के ख्याल में यह बात नहीं आ सकती है कि ॐ के अर्द्ध चंद्र को या चांद के आधे टुकड़े को इतना जो आदर दे रहा है। वह ओम (ॐ) का ही टूटा हिस्सा है। यही नहीं अरबी भाषा के शब्द 'आमीन या आमेन' 'ओम्' के ही अपभ्रंश हैं। आमीन का अर्थ है- खुदा ऐसा करे, यानी एवमस्तु-तथास्तु। बंदगी के अल्लाह के इस्तकबाल के लिए 'आमेन' शब्द का प्रचुर प्रयोग होता रहा है।

ईसाई मत और ॐ

ईसाइयों का मूल परम्परावादी सम्प्रदाय यानी 'कैथोलिक ईश (गॉड) के अभिवादन के लिए अपनी प्रार्थनाओं के अंत में 'आमीन' या 'आमेन' शब्द का प्रयोग करते रहे हैं। कुछ कैथोलिक धर्मशास्त्रियों की राय में (ओम्) वही शब्द है, जिसका कि बाइबल में उल्लेख है। 'वह (आमेन) सृष्टि के आरंभ में था। ईश्वर (गॉड) के साथ ईश्वर था।' (योहन 1:1)। कुछ कैथोलिकों के आनुसार 'आमेन' को बाइबल में 'अल्फा' तथा 'ओमेगा' यानी (आदि और

अंत) के नाम से भी निरूपित किया गया है। पालटिलिक सरीखे धर्मशास्त्रियों ने बाइबल के उस संदर्भ विशेष को उद्धत किया है, जिसमें ईसा मसीह ने संत योहन से यह कहा था, ''मैं ही 'आमेन' हूं।''

कैथोलिक कर्मकांड में लैटिन भाषा के अनेक शब्दों का प्रयोग हुआ है, जिनमें 'ओम्' का ही अपभ्रंशित रूप विद्यमान है। कालातंर में लैटिन के ये शब्द अंगरेजी ने भी आत्मसात कर लिये हैं। लैटिन भाषा के कुछ शब्द हैं- 'ओमनी प्रेजेंट' यानी सर्वव्यापक, 'ओमनी पोटेंट' यानी सर्व शक्तिमान, 'ओमनी शिएंट' और 'परे ओमनीया संकुला सेकुलोरूम' आदि। संत मेरी कॉलेज कुर्सियांग, दार्जलिंग के चर्च की वाचन पीठिका पर 'सलीब' के बीचों-बीच ऊँ (ओम्) को अंकित किया गया है।

आखिर ओम् में ऐसा क्या है?

ओम् (ऊँ) हमारी भाषा की तीन मूल ध्वनियों- 'अ', 'उ', 'म' अंगरेजी में ए.यू.एम. पर आधारित एक अर्थहीन-अर्थातीत (बीयोंड मीनिंग) शब्द है। अर्थातीत से तात्पर्य यह है कि चित्त की जिस अवस्था विशेष में जहां सारे 'शब्दार्थ' खो जाते हैं, जहां ज्ञाता (Konwer) 'नोवर' को जानने के लिए कुछ भी शेष नहीं रहता है, ज्ञाता के मन से सारे संदेह, भ्रम, विषय-जाल, ऐंद्रिक, मानसिक व भावनात्मक विकार नष्ट हो जाते हैं। और जहां से वह 'स्व' (self) के बोध संसार में अदृश्य परम तत्व या निराकार ब्रह्म की प्रतीति करने लगता है, उस बोध की मानसिक स्थिति को प्रतीकात्मक रूप में ओम् (ऊँ) से व्यक्त किया जाता है। वस्तुतः वैदिक मत की आध्यात्मिक विवेचना के अनुसार जब चित्त विचारों व भावों से सब भांति 'शून्य' हो जाता है, तब भी ओम रूपी शून्य की ध्वनि शेष रहती है। 'शून्य' का तात्पर्य यहां सूनेपन, रिक्तता या किसी नकारात्मक भाव से नहीं है। 'शून्य' की भी भाषा है, वह भी बोलता है, शून्य का भी एक सन्नाटा है और उस सन्नाटे में जो मूल ध्वनियां- अ, उ, म हैं, केवल वे ही शेष रह जाती हैं। वस्तुतः भाषा जगत की समस्त ध्वनियां का विस्तार इन तीन मूल ध्वनियों के अभिनव-नवीन संबंधों और जोड़ों से हुआ है।

ऊँ और सातवां शरीर

कदाचित आपको इस सत्य कथ्य का पता नहीं है कि मनुष्य स्थूल शरीर के अतिरिक्त अन्य छह शरीरों का भी स्वामी है और यदि आपको इन छह शरीरों के बारे में सृजनात्मक जानकारी भी है, तो इन शरीरों की उपस्थिति का भी कोई 'अपना बोध' अनुभव नहीं है। योग और तंत्र सम्मत कुंडलिनी साधना में मनुष्य के 'सात शरीर' बताये गये हैं और इन सात शरीरों के अपने-अपने सात चक्र भी हैं। 'ऊँ का विशुद्ध रूप से संबंध सातवें शरीर

यानी निर्वाण शरीर (बॉडीलैस बॉडी) से है। 'कुंडलिनी-साधना में निर्वाण शरीर सहस्रार चक्र' से संबंधित है। वैसे ही ऊँ की प्रतीति चौथे शरीर से यानी मनस शरीर (मेंटल बॉडी) जिसका चक्र-अनाहत है, से होने लगती है। मनुष्य के सात शरीरों ओर सात चक्रों का क्रमवार विवरण इस प्रकार है : शरीर - संबंधित चक्र, स्थूल शरीर - मूलाधार चक्र, (जो दृश्य है), आकाश शरीर - स्वाधिष्ठान चक्र, सूक्ष्म शरीर - मणिपुर चक्र, मनस शरीर - अनाहत चक्र, आत्मिक शरीर - विशुद्ध चक्र, ब्रह्म शरीर - आज्ञा चक्र, निर्वाण शरीर - सहस्रार चक्र।

प्रथम स्थूल शरीर (भौतिक शरीर) का चक्र मूलाधार है, जिसे योगियों-तांत्रिकों और साधको ने गुदा के समीप अवस्थित बताया है। मूलाधार चक्र की दो संभावनाएं हैं। इस चक्र की पहली प्राकृतिक संभावना काम वासना है, जो प्रकृति प्रदत्त है। मूलाधार चक्र की दूसरी संभावना ब्रह्मचर्य की उपलब्धता है, जो यह स्थिति साधना द्वारा कामवासना के रूपांतरण से उपलब्ध होती है। इस तरह हर शरीर की प्रकृत्ति प्रदत्त संभावनाएं हैं। इन संभावनाओं का 'साधना' से उन्नयन-रूपांतरण किया जा सकता है। 'ऊँ' का संबंध सातवें शरीर यानी निर्वाण शरीर (बॉडीलेस) से है।

-प्रस्तुति : साध्वी पद्मश्री

चुटकुले

1. संता : नेवी में जॉब निकली है, करोगे?
बंता : हां-हां जरूर, काम क्या करना होगा?
संता : जब जहाज बीच समंदर में रूक जाए तो तुम्हें पीछे से धक्का लगाना होगा।

2. एक लड़का बहुत से कपड़े उठाकर भाग रहा था। सिपाही ने उसे चोर समझकर रोक लिया।
लड़का बोला : आप गलत समझ रहे हैं। ये कपड़े तो मैं टेलर से सिलवाकर ला रहा हूं।
सिपाही : तो फिर भाग क्यों रहे हो?
लड़का : जल्दी पहन लूं। कही फैशन बदल न जाए।

3. चन्दन : यार मुझे आज एक रूपये में तीन अमरूद मिले।
प्रवीन : कैसे?
चन्दन : एक रूपये का एक फलवाले से खरीदा, एक चुराकर भागा और एक फलवाले ने फेंककर मारा।

परमात्मा में विश्वास के बिना भक्ति नहीं होती

श्रीमद्भागवत और रामचरित मानस भक्ति प्रधान ग्रंथ है। इन भक्ति प्रधान ग्रंथों का आनंद लेने के लिए ज्यादा विद्वता की आवश्यकता नहीं होती है। हां, भावपूर्ण हृदय की आवश्कता जरूर होती है। वक्ता संत हो और श्रोता समर्पित हो। भावपूर्ण हृदय होना और भी आवश्यक है। वैसे तो भागवत में जीवन से जुड़े सभी प्रश्नों का उत्तर मिल जाता है लेकिन कई बार लोग भागवत के बारे में ही बड़े अनोखे प्रश्न उठाते हैं। पूछते हैं कि भागवत में राधाजी का नामोल्लेख क्यों नहीं है? नामोल्लेख भले ही न हो लेकिन भागवत में राधा ही हैं। भागवत का मतलब है भगवान। और यह भगवान का वाडमय स्वरूप है। भागवत में कृष्ण ही हैं पर कृष्ण अकेले नहीं है, वह राधायुक्त हैं।

मंदिर में जब आप भगवान के दर्शन करते हैं, तो वहां उनके मूर्ति यानी विग्रह की पूजा धूप, दीप, नैवेद्य आदि से करते हैं। भागवत भी एक प्रकार से भगवान का अक्षर-विग्रह है। इस विग्रह की पूजा कथन, पठन और श्रवण आदि से होती है। वहां दर्शन और यहां श्रवण। मंदिर में जाओगे, दर्शन करोगे तो प्रभु का जो भी विग्रह है, उसका जो स्वरूप मंदिर में विराजमान है वह नेत्रों से होते हुए तुम्हारे हृदय में आकर बैठ जाएगा। इसी तरह कथा सुनते समय भगवान जो स्वरूप भागवत के रूप में विद्यमान है, वह तुम्हारे कानों से तुम्हारे भीतर आकर बैठ जाएगा। मुख्य बात यह है कि भगवान हमारे शरीर रूपी इस घर में आना चाहते हैं दर्शन और श्रवण के जरिए।

ध्यान रखें कि पाप और परमात्मा के प्रवेश का स्थान एक ही है यानी हमारे आंख और कान। यदि जीवन में संयम नहीं है तो इनसे पाप भी अंदर आते हैं। लेकिन मन भगवान में लगाया तो इनसे परमात्मा भीतर प्रवेश करते हैं। इसलिए हमारे ऋषियों-मुनियों ने इस पर बहुत जोर दिया है कि क्या देखना है और क्या सुनना है। यह कितना बड़ा सौभाग्य है हमारा कि मंदिर जाते हैं, तो प्रभु नेत्र द्वार से हमारे भीतर आते हैं। और सत्संग में जाकर श्रवण करते हैं। तो प्रभु की महिमा हमारे कानों से हमारे भीतर आती है।

कहते हैं कि घर आए प्रभु को भोग लगाना चाहिए। तो क्या भोग लगाओगे? अब चाहे छप्पन भोग दो लेकिन सबसे ज्यादा पसंद क्या है कन्हैया को? माखन मिश्री। यह माखन क्या है? मन ही माखन है। मन रूपी माखन का भोग लगाना है भगवान का भोग लगाना है भगवान को। उनमें इतनी सामर्थ्य है कि भक्त के मन को स्वयं ही चुरा लेते हैं। ध्यान रखना बस मन माखन जैसा कोमल हो, कठोर न हो। बहुत सुंदर शब्द है नवनीत। नवनीत का एक अर्थ है जो नित्य नया है। मन भी रोज नया चाहिए। बासी मक्खन भगवान को अच्छा नहीं लगता। इसलिए शोक और भविष्य की चिंता से मुक्त हो जाओ। पर ऐसा कब

होगा, जब वर्तमान में विश्वास कायम करोगे, यानी परमात्मा में विश्वास। बिना विश्वास के भक्ति नहीं होती। हमें वर्तमान को उत्सवमय बनाना है। भगवान स्वयं ही मन को चुरा लेते हैं। मन एक बार भगवान ने ले लिया तो फिर इंद्रियों की गति उन्हीं की ओर होगी। आंख उन्हीं के पीछे भागेगी। कान उन्हीं को सुनने के लिए लालायित होंगे, पैर उन्हीं के पीछे भागेंगे। हाथ उन्हीं की सेवा में लगे रहेंगे।

भागवत का अर्थ कृष्ण और राधा है। यही हमारा सच्चा धन है। वैष्णवों के पास यही तो संपत्ति होती है। जो भागवत को कंठस्थ कर लेता वह बिल गेट्स बने न बने लेकिन वह वैकुंठ का स्वामी जरूर बन जाता है। और जब केवल कंठस्थ करने से कोई व्यक्ति वैकुंठ का स्वामी बन जाता है तो हृदयस्थ करने से तो पता नहीं क्या होगा? भागवत कथा का श्रवण मन को निर्मल करता है। मन को धोने की व्यवस्था का नाम सत्संग है। जैसे कला के साथ अभ्यास का महत्व है उसी तरह मन के साथ भी यह बात लागू होती है। सत्संग सदा होनी चाहिए।

-प्रस्तुति : सीमा सिंह (स्वीडन)

गजल

बन आस्तीं का साँप यूँ डसने लगे हैं लोग
अब दोस्ती के नाम से डरने लगे हैं लोग

संवेदनाएँ मिटती हैं जाती कुछ इस तरह
अब बेझिझक ही मारने मरने लगे हैं लोग

होगी सुरक्षा नारी की अब कैसे सोचिए
जब कोख में ही वार यूँ करने लगे हैं लोग

वीभत्स रूप अपना कुछ ऐसा बना लिया
शीशे में शक्ल देखके डरने लगे हैं लोग

खिलवाड़ हो रहा है यूँ मासूमियत के साथ
पेट अपना, छीन बच्चों से भरने लगे हैं लोग

गीता कुरान वेद से कुछ वास्ता नहीं
अश्लील पुस्तकों को ही पढ़ने लगे हैं लोग

-महेन्द्र जैन

कहानी

रानी माँ रजिया सुल्ताना

उस समय दिल्ली सल्तनत की बागडोर गुलाम वंश के हाथ में थी। तत्कालीन सुल्तान इल्तुतमिश की बेटी रजिया अत्यंत प्रखर बुद्धि की थी। पांच-छह वर्ष की नन्ही-सी उम्र में ही वह तीर-कमान से निशानेबाजी करने लगी थी। उसका साथी अल्तूनिया भी साथ में होता। रजिया को तीरंदाजी का खेल सबसे प्रिय था। आम बच्चों से पृथक अपनी बेटी में कुछ विशेष लक्षणों को देखकर सुल्तान उसे एक पहुंचे हुए फकीर के पास ले गए। रजिया को देखकर उस फकीर ने भविष्यवाणी की- 'सुल्तान, तेरी बेटी रजिया सल्तनत का सुल्ताना होकर तुम्हारे खानदान का नाम रोशन करेगी।'

फकीर की भविष्यवाणी और बेटी की रुचि से प्रभावित होकर सुल्तान इल्तुतमिश ने रजिया को तलवार, तीरंदाजी तथा घुड़सवारी की शिक्षा देने का पूरा प्रबंध कर दिया। फलतः दस-बारह वर्ष की होते-होते रजिया घुड़सवारी और तीरंदाजी में पूर्ण रूप से निपुण हो गई। तेज से तेज घोड़े को काबू में कर लेना उसके बाएं हाथ का खेल था। कुछ और बड़ी होने पर रजिया अपने पिता को राजनीतिक मामलों में उचित और उपयोगी सलाह देती थी, जिससे इल्तुतमिश बहुत प्रभावित होता था।

अपने बेटों के अयोग्य होने के कारण सुल्तान ने अपनी बेटी रजिया को ही अपना उत्तराधिकारी नियुक्त किया। रजिया ने केवल साढ़े तीन वर्ष शासन किया। वह बहुत वीर, योग्य और नेकदिल सुल्ताना थी। दिल्ली की जनता उसको आदर और सम्मान के साथ 'रानी मां' कहकर संबोधित करती थी।

शासन की बागडोर संभालने के साथ ही रजिया ने अपने राज्य में सभी को खुशहाल रखने का पूर्ण प्रयास किया। हिंदू और मुसलमान दोनों के साथ सुल्ताना ने हमेशा बराबर का व्यवहार किया। दिल्ली की सुल्ताना में अपनी प्रजा के लिए करुणा और ममता का अक्षर भंडार भरा था। हिंदू हों या मुसलमान, वह गरीब मां-बाप की लड़कियों की शादी करने व बच्चों की पढ़ाई के लिए धन देकर उनकी पूरी तरह से मदद करती। भूख से बिलबिलाते लोगों को मुफ्त भोजन व मिठाई बांटने की भी पूर्ण व्यवस्था थी। मुसलमान जनता तो पहले से ही खुशहाल थी। त्रस्त हिंदुओं को भी सुल्ताना रजिया ने जजिया कर से मुक्त कर दिया था।

घोड़े पर सवार होकर रजिया सुल्ताना प्रातः नित्य ही हिन्दू व मुस्लिम बस्तियों का जायजा लेने निकल पड़ती। एक दिन जब वह दिल्ली की सड़कों पर अपनी जनता का हाल जानने के लिए घूम रही थी तभी कुछ दूरी पर उसे कुछ सिपाही एक युवक को कोड़े से मारते हुए दिखाई दिए। करीब पहुंचकर रजिया ने तेज आवाज में सिपाहियों को उस युवक को मारने से रोका। पता करने पर ज्ञात हुआ कि वह युवक ठाकुर है और अपनी शादी रचाने जा रहा था तभी तुर्क सिपाहियों ने उसे रोककर इस्लाम कुबूल कर लेने को कहा।

ठाकुर अपना धर्म छोड़ने को तैयार नहीं हुआ, तब तुर्क सिपाहियों ने उसे मार-मार कर अधमरा कर दिया। रजिया ने सिपाहियों को चेतावनी देते हुए कहा- 'खबरदार, अगर आगे से कभी किसी हिंदू को जबरदस्ती मुसलमान बनने को मजबूर किया। जिसने इस आदेश की अवहेलना की उसकी चमड़ी उधेड़ ली जाएगी।'

सुल्ताना ने उस ठाकुर को दवा- इलाज के लिए पैसा देना चाहा, लेकिन उसने दर्द से कराहते हुए हाथ जोड़कर कहा- 'पैसा हमारे पास है रानी मां, आप सचमुच देवी हैं।' रजिया ने अपने कुछ खास सिपाहियों के साथ उसे उसके घर भेजने का प्रबंध कर दिया।

कई वर्षों से हिंदुओं को मंदिरों में अपने देवी-देवताओं की पूजा-आराधना करने पर सख्त पाबंदी थी। रजिया ने हिंदू जनता को मंदिरों में पूजा करने की आजादी दे दी। अतः सुल्ताना की मेहरबानी से दिल्ली के मंदिरों में घंटे-घड़ियालों की गूंज फिर से सुनाई पड़ी। गदगद और कृतज्ञ हिंदू जनता जब-जब अपनी रानी मां को धन्यवाद देने दरबार में पहुंच जाती। उनका हर्ष से खिला चेहरा देखकर रजिया को अपार सुख-चैन की अनुभूति होती।

इंसान ही नहीं रजिया पशुओं के प्रति भी बड़ी दयालु थी। षडयंत्रों में फंस जाने के कारण रजिया को साढ़े तीन वर्ष की अल्प अवधि में ही सत्ता से हाथ धोना पड़ा। पुनः अपनी खोई सल्तनत प्राप्त करने के लिए उसने अपने बचपन के मित्र अल्तूनिया के साथ मिलकर दिल्ली पर आक्रमण करने की योजना बनाई।

दिल्ली के आसपास एक घने जंगल में रजिया और अल्तूनिया ने अपने सैनिकों के साथ उस जगह पर डेरा डाला, जहां तक किसी का पहुंच सकना मुश्किल था। लेकिन रजिया की सेना के दो गद्दार करीम खां और और खालिद के विश्वासघात के कारण दुश्मन के सिपाही उस ठिकाने तक पहुंच गए। दोनों सेनाओं में भिड़ंत होने से ठीक पूर्व एक शेर की भयानक दहाड़ से पूरा जंगल कांप उठा। करीब ही भयानक शेर की उपस्थिति का अनुमान लगाकर दुश्मन सेना में भगदड़ मच गई। रजिया ने साथी आल्तूनिया की ओर मुस्कराकर देखा और कहा- 'बिना कुछ किए ही आफत टल गई।'

ठीक इसी समय वह भयानक शेर उन दोनों को थोड़ी दूर पर जाते दिखा। अल्तूनिया उसको मौत के घाट उतारने के लिए आगे बढ़ा ही था कि रजिया ने उसे रोकते हुए कहा- 'नहीं अल्तुनिया समझ से काम लो। आज इस भयानक शेर ने अपनी दहाड़ से दुश्मनों में दहशत फैलाकर हमारे प्राणों की रक्षा की है। इस एवज में उसकी जिंदगी बख्शना हमारा कर्तव्य है।'

अल्तूनिया ने आश्चर्य से रजिया की तरफ देखा। इंसान तो इंसान इतने भयानक जानवर पर दया दिखाकर रजिया ने अपनी रहमदिली का एक अनूठा उदाहरण पेश किया था।

दिल्ली सल्तनत पर रजिया का दुबारा अधिकार तो न हो सका लेकिन दिल्ली की तत्कालीन जनता अपनी सहृदय रानी मां को कभी भुला न सकी।

-प्रस्तुति : राजेन्द्र मेहरा

परम उपासक पुनिया

संत समागम एवं उनकी निर्मल वाणी से तृप्त पुनिया संपूर्ण मगध में विख्यात हो गया हो गया था। संतोष, समता, सादगी एवं शिष्टाचार में वह बेजोड़ था। अतिथि सत्कार में तो उसकी समानता करने वाला कोई ही नहीं। उसके पास दो समय का भोजन भी नहीं था, पर उसके हृदय ही उदारता तो बस उसी के पास थी। एक दिन वह स्वयं निराहार उपवास करता तो दूसरे दिन उसकी पत्नी निराहार उपवास करती और इस तरह अन्न आदि बचाकर वे अतिथियों को सत्कार करते। संपत्ति के नाम पर तो केवल बारह दोकड़े (उस समय एक रुपये के एक सौ ड्रेकड़ों का हिसाब था जो आज बारह दौकड़े पैसों के बाराबर बैठते हैं) थे, पर उसकी ऋद्धि की तुलना में सम्राट श्रेणिक भी नाचीज था और यह बात भगवान महावीर ने अपने प्रवचन में कही थी।

एक दिन उसके घर एक विद्या सिद्ध अतिथि पधारे। उस दिन पूर्णिमा थी और पुनिया का उस दिन उपवास था। उसने बड़े प्रेम एवं उल्लास से स्वधर्मी अतिथि की सेवा-भेक्ति की, आतिथ्य किया। भोजन करते समय अतिथि ने घर के भीतर दृष्टि डाली तो देखा घर में कुछ भी तो नहीं। मिट्टी-गोबर से लिपे-पुते सामान्य घर में कुछ बर्तनों एवं स्वच्छता के अतिरिक्त कुछ भी नहीं था। उन सिद्धपुरुष अतिथि ने सोचा, 'वाह पुनिया वाह!' पुनिया की सर्वत्र ख्याति है, पर घर में कुछ नहीं। उसके हृदय में कितना स्नेह, कितनी उदारता और कितना सत्कार है? ऐसी निर्धन परिस्थिति में भी वह किसी न किसी को खिला कर ही खाता है। स्वयं व्रत उपवास करके भी वह अतिथि का सन्नेह स्वागत करता है। पुनिया तूने तो कमाल कर दिया। तू तो सचमुच कोई अलौकिक विभूति है।

इस तरह सोचने हुए उस सिद्धपुरूष ने संकल्प कर लिया कि मैं अनेक सिद्धियों का स्वामी हूं, शक्ति-संपन्न हूं तो फिर पुनिया की कुछ सहायता क्यों न कर दूं? ठीक है, आज रात्रि में कुछ अवश्य करूंगा।

पूर्णिमा की धवल चांदनी पुनिया के आंगन में प्रासरी हुई थी। पुनिया निश्चिंत बना मधुर निद्रा का वास्तविक आनन्द ले रहा था, क्योंकि वह तो निर्भीक था। न तो उसे किसी चोर का भय था और न किसी राजा का। वह तो अवधूतों का सत्संगी, निडरता के साम्राज्य का एक निर्भीक नागरिक था। ऐसे वातावरण में वह सिद्धपुरुष अपने स्थान पर खड़े हुए, रसाई घर में गये और अपनी झोली में से पारसमणि निकाल कर लोहे के तवे से स्पर्श की। तवा स्वर्ण का हो गया।

सिद्धपुरुष प्रातः उठ कर काशी की ओर प्रस्थान कर गये। पुनिया ने प्रातः अपना तवा ढूंढा तो गायब। चूल्हे के निकट अपने लोहे के काले तवे के स्थान पर स्वर्ण का देदिप्यमान तवा दृष्टिगोचर हुआ। पुनिया तो निराश हो गया। बरबस उसके ये उद्गार निकल रहे थे- अतिथि बंधु! आपने तो गजब कर दिया। आप तो चमत्कार कर गये, पर मैं नया तवा कैसे खरीदूंगा? कहां से लाऊं पैसे? आपका यह स्वर्ण का तवा भला मेरे किस उपयोग का? 'पर द्रव्येषु लोष्ठवत्।' मेरे लिए तो परेशानी हो गई।

समय व्यतीत होता गया। अनेक तीर्थों की यात्रा करके सिद्धपुरुष लौटते समय भी राजगृही में आये और इस बार भी पुनिया के ही अतिथि बने। भोजन करने के पश्चात् अतिथि ने यात्रा के मधुर प्रसंगों का वर्णन किया। पुनिया भी यात्रा के संस्मरण श्रवण कर धन्य होता रहा। यात्रा-वृतांत ससमाप्त होने पर उपलों के ढेर में छिपा कर रखा हुआ स्वर्ण का तवा पुनिया ने लाकर उन सिद्धपुरुष के समझा रखा और कहा- 'महामन्! आप तीर्थयात्रा पर निकले हैं अथवा किसी को व्यर्थ कष्ट में उतारने? यह लीजिये आपका तवा। मुझे इसकी आवश्यकता नहीं। यह मेरे लिए तनिक भी उपयोगी नहीं है।'

पुनिया ने अपना आशय निवेदित किया, 'आपने कदाचित सोचा होगा कि इस बेचारे निर्धन की कुछ सहायता करता चलूं, पर बिना परिश्रम का स्वर्ण यदि मैं ले लूं तो स्वर्ण सी विशुद्ध एवं निर्मल बुद्धि को तवे सी काली होने में तनिक भी विलम्ब नहीं लगेगा। आज जो अतिथि सत्कार के लिए मेरे हृदय में उत्साह और उल्लास है, वह फिर रहेगा क्या? एक बार बिना परिश्रम का माल लेने की आदत पड़ने पर मानव आजीवन बिना परिश्रम का माल ही ढूंढता रहता है और वह नीचे गिर जाता है। वह अपार संपत्ति का स्वामी कुबेर भी बन जाये, तो भी किसी को देना नहीं चाहेगा, वह सदा लेना ही चाहेगा।

सिद्धपुरुष पुनिया के समक्ष नतमस्तक हो गये। वे बोले, 'नाना प्रकार की सिद्धियां प्राप्त करने में मैंने पूरा जीवन व्यतीत कर लिया, पर वास्तविक सिद्धि तो तुमने अर्जित की है, तुमने ही सच्ची साधना की है। अनेक तीर्थों पर जाकर अनेक पवित्र सरिताओं में मैं निर्मल जल में स्नान कर आया, पर मेरी आत्मा तो आज यहां तुम्हारे पास विशुद्ध हुई है। तुम ही मेरे महातीर्थ हो। अब तो मेरी यही कामना है कि जिस संतोष का पाकर तुमने इस स्वर्ण को भी मिट्टी समझा, वही संतोष मेरी संपत्ति बनें।'

सिद्धपुरुष ने पुनः कहा, 'सचमुच के पारसमणि तो तुम हो, पुनिया! जिसे पाकर व्यक्ति का हृदय पवित्र तथा निर्मल बन जाता है।'

-प्रस्तुति : साध्वी वसुमति

कड़वे करेले का कमाल

देश भर में मिलने वाला सस्ता सा करेला, अत्यंत गुणकारी सब्जी है। इसमें औषधीय गुण कूट-कूट कर भरे होते हैं। करेला मधुमेह तथा हृदय रोगियों के लिए लाभप्रद है। आमतौर पर इसका उपयोग तो सब्जी के रूप में होता है। किंतु इसके छिलकों, पत्तों, जड़, लताओं एवं फूलों का भी औषधीय उपयोग किया जाता है।

आयुर्वेद के मुताबिक करेला गर्म, हल्का तथा स्वाद में प्रचंड कड़वा होता है। यह दस्तावर, वातदोष, नाशक, ज्वर, कफ, पित्त, प्रमेह, पांडुरोग और कृमिनाशक होता है। यह रुचिकर तथा पाचक होता है। इसमें प्रोटीन, फास्फोरस, लौह, कैल्शियम आदि रसायनिक तत्व भरपूर मात्रा में होते हैं। विटामिन-सी की प्रचुरता के कारण यह भोजन पचाने में सहायक होता है।

करेले का कड़वापन मानव स्वास्थ्य के लिए हितकारी होता है। कड़वे रस के कारण मधुमेह रोग में विशेष उपयोगी होता है। अगर करेले के रस का नियमित सेवन किया जाय तो रक्त शर्करा को नियंत्रित किया जा सकता है। इसीलिए ब्रिटिश वैज्ञानिकों ने करेले को प्लांट इंसुलिन की उपाधि दी है। इसके सेवन से कोलेस्ट्राल को भी नियंत्रित किया जा सकता है।

करेला दूध में व्याप्त मोटापे तथा कई विकारों को दूर करता है। गर्म होने के कारण स्त्रियों के पीड़ादायक मासिक स्राव में हितकारी होता है। इसके अलावा गठिया रोगी को करेले का रस लगाना चाहिए तथा रोगियों को उबला करेला खिलाना चाहिए। करेले के अभाव में इसकी पत्तियों एवं लताओं को भी उपयोग में लाया जा सकता है।

दस्तावर होने के कारण करेला कब्ज रोगनाशक होता है। यह हृदय की क्रियाशीलता बढ़ाकर पाचक पित्त का स्राव बढ़ाता है। बवासीर के रोगी को करेले की पत्तियों के साथ दही का सेवन करना चाहिए। खूनी बवासीर में एक चम्मच करेले के रस में शक्कर मिला कर कुछ दिनों तक सेवन करने से लाभ होता है। यकृत रोग में इसका रस लाभकारी होता है। तिल्ली बढ़ जाने पर 25 मिली करेले का रस पानी में मिलाकर पीने से सूजन कम हो जाती है।

करेला त्वचा रोगों जैसे- फोड़े, फुंसी, खुजली तथा खून की खराबी में अत्यंत गुणकारी होता है। यह खून को साफ करता है। दाद-खाज के रोगी उबले हुए करेले को नींबू रस, शहद और अजवायन के साथ प्रतिदिन सुबह-शाम सेवन करें। काफी लाभप्रद होगा। जिस प्रकार दूसरी औषधि के सेवन में सावधानी की आवश्यकता होती है, उसी प्रकार करेले के

सेवन में भी कई सावधानियों की दरकार है। करेले की प्रकृति एवं अपच के पुराने रोगी को करेले का कम सेवन करना चाहिए। अधिक मात्रा में इसके सेवन से प्यास तथा शरीर में जलन की शिकायत हो सकती है। अमूमन गृहणियां करेले की कड़वाहट को कम करने के लिए नमक-हल्दी लगाती है और उसे मल-मलकर धोती हैं, तेल में तलती हैं या तेज धूप में सुखाती हैं। ऐसा नहीं करना चाहिए क्योंकि इससे करेले के 78-80 प्रतिशत पोषक तत्व नष्ट हो जाते हैं।

-प्रस्तुति : अरूण तिवारी

योग्यता की पहचान

एक बार लंदन में मूसलाधार बारिश हो रही थी। ठंड इतनी ज्यादा थी कि लोगबाग ठिठुर रहे थे। रात में एक होटल में कांपते हुए पति-पत्नी पहुंचे और उन्होंने एक कमरा मांगा। मैनेजर ने कहा, 'माफ कीजिए, इस समय तो कोई कमरा खाली नहीं है।' इस पर औरत बोली, 'हम कई होटलों के चक्कर काट चुके हैं। सबने यही जवाब किया कि कमरा खाली नहीं है। इस वक्त हम कहां जाए?' लेकिन मैनेजर ने उनकी सहायता करने से इनकार कर दिया। यह बातचीत एक बैरा सुन रहा था। उसने कहा, 'बुरा न मानें तो मैं एक बात कहूं। मेरा एक छोटा सा कमरा है। आज रात आप लोग मेरे कमरे में ठहर सकते हैं।' महिला ने पूछा 'फिर तुम कहां रहोगे?' उसने कहा- 'इस होटल में ही रात गुजार लूंगा।' उसने उस दंपती को अपने कमरे में ठहरा दिया। इस घटना में कई साल बाद उस बैरे को एक पत्र और न्यूयॉर्क आने का टिकट मिला। यह सब वहां के किसी होटल के मालिक ने भेजा था। पत्र में लिखा था कि आप तुरंत आकर मिलें। बैरा न्यूयॉर्क में उस पते पर पहुंचा, तो हैरत में पड़ गया। सामने बैठे आदमी को देख कर उसे याद आया कि यह तो वही सज्जन हैं, जिन्हें उसने एक बार अपने कमरे में ठहराया था। उस सज्जन ने बैरे से कहा, 'मुझे विलियम कहते हैं। यह मेरा ही होटल है।' फिर विलियम ने होटल की चाबी उसे देते हुए कहा- 'आज से तुम मेरे होटल के मैनेजर हो।' बैरा घबराकर बोला- 'यह मुझसे नहीं होगा। मैंने हमेशा बैरे का काम किया है। इतनी बड़ी जिम्मेदारी संभालने की मुझमें योग्यता नहीं है।' विलियम ने कहा- 'मैंने उसी दिन तुम्हें परख लिया था, जब तुमने सर्दी की रात में हमें शरण दी थी। मुसीबत में किसी के साथ सहानुभूति रखना और उसकी मदद करना एक मैनेजर की सबसे बड़ी योग्यता होती है। यह योग्यता तुम्हारे पास है।'

-प्रस्तुति : सोहनवीर सिंह (योगाचार्य)

मासिक राशि भविष्यफल-फरवरी 2012

○ डॉ. एन.पी मित्तल, पलवल

मेष-मेष राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह शुभ रहेगा। इस माह कोई नई योजना फली भूत हो सकती है, कोई पिछला रूका हुआ धन भी प्राप्त हो सकता है। समाज में यश मान, प्रतिष्ठा बनी रहेगी। परिवारिक जनों का सहयोग रहेगा। किन्हीं सरकारी कर्मचारियोंकी पदोन्नति भी सम्भव है। शत्रु सिर उठाएंगे।

वृष-वृष राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह कुछ अड़चनों के बाद शुभ फल देने वाला है। कोई रूका हुआ धन प्राप्त हो सकता है। शत्रु सिर उठाएंगें। मानसिक स्थिरता बनाए रखें। आय से अधिक खर्च होगा चाहे सुख साधनों पर ही क्यों न हो। आपके आप पास ऐसी स्थितियां बनेंगी कि आपको क्रोध आयेगा-अपने क्रोध पर काबू रखें, अन्यथा नुकसान उठाना पड़ सकता है।

मिथुन-मिथुन राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह आय कम और व्ययाधिक्य देने वाला है। स्वभाव में भी क्रोध का असर रहेगा। मानसिक परेशानी का सामना करना पड़ेगा। परिवारजनों में असामन्जस्य रहेगा। इस माह का केवल प्रथम सप्ताह कुछ शुभ प्रदायक है जिसमें कोई शुभ सूचना मिल सकती है या कोई मंगल कार्य संभावित है।

कर्क-कर्क राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह लाभालाभ की स्थिति लिये रहेगा। परिवार जनों से विचार भिन्नता के कारण मानसिक उद्विगना रहेगी। यह पूरा महीना व्यावहारिक स्थिति से तथा आर्थिक दृष्टि से उतार-चढ़ाव लिये हुए होगा। कानून के भी कुछ झंझट उठ सकते हैं और शत्रु भी परेशान कर सकते हैं जिसका समझौते के रूप में मास के अन्त तक हल निकलने की सम्भावना है।

सिंह-सिंह राशि के जातकों के लिये यह माह व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से कुल मिलाकर अच्छा ही कहा जाएगा। परिवार व कुटुम्बजनों में असामन्जस्य रहेगा किन्तु बाद में मेल जोल का वातावरण बन जाएगा। इस माह का उत्तरार्ध अधिक शुभ फलदायक है। समाज में मान प्रतिष्ठा, व यश की वृद्धि होगी। जो भी योजनाएं पूर्व में बनाई होंगी वे फलीभूत हो सकती हैं।

कन्या-कन्या राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह पूर्वार्ध से उत्तरार्ध में अच्छा फल देने वाला है। वैसे स्वभाव में क्रोध अधिक रहेगा। शुभ परिणामों के लिये क्रोध पर काबू रखना होगा। परिवार जनों में असामन्जस्य सम्भावित हैं, कोई बीच का रास्ता निकालें। खाने पीने के मामलें में बदपरहेजी स्वास्थ्य हानि कर सकती है।

तुला-तुला राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह अधिक परिश्रम द्वारा लाभ कराने वाला है। काफी दौड़ धूप करनी पड़ेगी। संगी साथी भी काम में मदद देने लगेंगे। समाज में मान सम्मान बना रहेगा। स्वजनों से वैर-विरोध होकर सुलह होने के आसार हैं। स्वास्थ्य की दृष्टि से छोटी मोटी बीमारी होगी जो ठीक हो जाएगी। सुदूर यात्राएं होंगी जिससे सुख की अनुभूति होगी। नई योजनाएं भी कार्यान्वित होंगी।

वृश्चिक-वृश्चिक राशि के जातकों के लिये यह माह मिला जुला प्रभाव लिये हुए होगा। नये लोगों से सम्पर्क बनेंगे। खर्च की कुछ अधिकता रहेगी। मानसिक चिन्ता रहेगी। इस माह का आखिरी सप्ताह इन जातकों के लिये शुभ कहा जा सकता है। घर में कोई मांगलिक कार्य सम्भावित है। अचानक कहीं से पैसा भी मिल सकता है। इन जातकों को अपनी सेहत के प्रति सचेत रहना होगा।

धनु-धनु राशि के जातकों के लिये यह माह व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से शुभ फलदायक है। माह के आरम्भ से ही व्यापार वृद्धि गोचर होने लगेगी। बड़े लोगों से मेल जोल होगा। परिवार जनों में सामन्जस्य बना रहेगा। समाज में मान प्रतिष्ठा बनी रहेगी। कुछ लोग बहकाने की कोशिश कर सकते है, उनकी बातों में न आएं। अपनी आत्मा की आवाज को सुन कर कार्यं करें। इस माह का दूसरा तथा तीसरा सप्ताह मिश्रित फल दायक है।

मकर-मकर राशि के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह आर्थिक दृष्टि से तृतीय सप्ताह में अति शुभफलदायक है जब कि बाकी सप्ताहों में लाभ तो होगा पर कोई न कोई अनावश्यक खर्च भी होगा। परिवार के लोगों में सामन्जस्य बना रहेगा। समाज में मान, यश प्रतिष्ठा बनी रहेगी। कुछ कानूनी अड़चनें आयेंगी मगर दूर हो जायेंगी।

कुम्भ-कुम्भ राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि ये यह माह कुल मिलाकर अवरोधों के पश्चात अल्प आर्थिक प्राप्ति का है। केवल प्रथम सप्ताह फिर भी संतोषजनक फल दायक है। भूमि भवन के मामलों में सचेष्ट रहना होगा।। अपने ही प्रतिकूल व्यवहार करेंगे। मानसिक रूप से चिन्तित रहेंगे। कोई बीमारी आपको घेर सकती है।

मीन-मीन राशि के जातकों के लिये व्यापार -व्यवसाय की दृष्टि ये यह माह कुल मिला कर अच्छा फल देने वाला है। परिश्रम तो अधिक करना पड़ेगा किन्तु लाभ मिलेगा। कोई नई योजना भी कार्यान्वित हो सकती है। इस माह का प्रथम सप्ताह शुभ फल दायक नहीं है, अन्य तीनों सप्ताह अच्छे रहेंगे। शत्रु सिर उठायेंगे किन्तु विजय इन जातकों की ही होगी। बुजुर्गों का आशीर्वाद प्राप्त करें। आत्म विश्वास बनाएं रखें।

-इति शुभम्

अर्थ और काम पर धर्म का अंकुश हो

सर्व-धर्म-संगोष्ठी में पूज्यवर का संदेश

नव वर्ष के आगमन पर मुम्बई, जुहू-सागर-किनारे पर आयोजित सर्व-धर्म-संगोष्ठी में अपने विचार प्रकट करते हुए पूज्य आचार्यश्री रूपचन्द्रजी ने कहा- आज देश में भ्रष्टाचार, महंगाई, काला धन आदि समस्याओं की चर्चा जोरों पर है। स्थिति यह है इस बीमारी से कोई भी वर्ग अछूता हो, ऐसा नहीं लगता।

इस देश के मंदिर में कहां दरार नहीं है
सही-सलामत एक भी दरो-दीवार नहीं है
मत पूछो किसने लूटा है इस गुलशन को
यह पूछो इस लूट में कौन हिस्सेदार नहीं है

आपने कहा- इस समस्याओं के समाधान के लिए हमें इनकी जड़ों तक जाना होगा। मूल कारण यह है आज अर्थ और काम पर धर्म का अंकुश नहीं रहा है। भारतीय चिंतन में चार पुरूषार्थ की अवधारणा दी गई- धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष। अर्थ और काम हर देहधारी से जुड़े हैं। इनसे मुक्त कोई नहीं है। जीवन-धारण के लिए ये जरूरी भी हैं। इन्हें पूरा करना कोई समस्या नहीं होता अगर इन पर धर्म का अंकुश होता। इसलिए चार पुरूषार्थों में अर्थ और काम से पहले धर्म को रखा गया। दुर्भाग्यवश अर्थ की अंधी दौड़ में आज यह देश धर्म को भूल गया है। चपरासी से लेकर ऊंचे अफसर तक, व्यापारी से लेकर नेता तक, पुजारी से लेकर संतों-धर्माचार्यों तक अपना-अपना धर्म-पालन करने लग जाएं तो समस्याओं का समाधान चुटकी बजाते हो जाए। आज हमें इस दिशा में गंभीरता से ध्यान देना है।

धर्म-परायण उद्योग-पति श्री बी.के. मोदी के जन्म-दिन पर Indian Council of Religious Leaders द्वारा आयोजित इस संगोष्ठी में भानुपुरा पीठ के शंकराचार्य श्री दिव्यानंद तीर्थ, श्री दलाई लामा के प्रधानमंत्री श्री रिपोचे परमार्थ आश्रम, ऋषिकेश के प्रमुख स्वामी चिदानंद सरस्वती, अजमेर दरगाह के दीवानजी, क्रिश्चियन धर्म के आर्कविशपजी, यहूदी धर्म के श्री मालेकर जी, बहाई धर्म के श्री ए.के. मर्चेंट, पारसी धर्म, सिक्ख धर्म, तथा ब्रह्मकुमारी प्रतिनिधि भी उपस्थिति थे।

पूज्यवर की अष्ट-दिवसीय मुम्बई-यात्रा में दो दिन जुहू, दो दिन गोरे गांव, एक दिन विले पारले तथा तीन दिवसीय प्रवास दादर में रहा। सभी उपनगरों में धर्म-चर्चा, प्रवचन-भजन हुए। गोरे गांव में खाटू निवासी श्री ताराचन्द जी सेठिया के यहां पूज्यवर के

पदार्पण पर सेठिया जी के सुपुत्र मनोज तथा राजेन्द्र तथा सुपुत्री ऋतुबाई एवं दामाद अजय बरडिया ने पूरी जिम्मेवारी से लाभ लिया। अपनी धर्म-पत्नी के वियोग का सेठिया जी के मन पर काफी असर था। पूज्यवर के भजन-प्रवचनों से उनको काफी आत्म-संवल मिला। मन में मजबूती आई। इस प्रवास में राठी परिवार ने भी भजन-सत्संग में पूरी दिलचस्वी से भाग लिया। शिव रतन राठी परिवार का आपसी प्रेम तथा संत-पुरूषों के प्रति श्रद्धा-भावना विशेष उल्लेखनीय है एक प्रवचन बोरीवल्ली में श्री प्रभाकर जी के आवास पर भी रहा। बहुत ही सेवा परायण तथा साफ-सुथरा जीवन है प्रभाकर जी का। अरूण तिवारी के अनुज अनिरूद्ध तिवारी के घर पर भी पूज्यवर पधारे। अनिरूद्ध ने अच्छी सेवा-भावना दिखलाई।

विले पारले में श्री पन्ना बाबू शकुंतला वाई दसानी के आवास पर अच्छी तत्व चर्चा रही। दादर-प्रवास में दो विशेष प्रवचन श्री शांतिनाथ जैन मंदिर में रहे। दादर-जैन समाज ने बड़ी संख्या में प्रवचनों का लाभ लिया। कमिटी के अध्यक्ष तथा ट्रष्टी-गण ने मुम्बई-आगमन पर पुनः प्रवचनों के लिए विनती की।

दादर के सफल प्रवास का पूरा श्रेय श्री सोहनराज जी खजांची परिवार को जाता है। खजांची जी वयोवृद्ध होते हुए भी प्रगतिशील विचारों के धनी है। विद्या-वाडी शिक्षा-संस्थान राजस्थान में आपकी प्रशंसनीय सेवायें रही हैं। विचारों में अनाग्रह, साफ-सुथरा जीवन तथा स्पष्ट निर्भीक संभाषण खजांची जी के व्यक्तित्व को एक अलग पहचान देते हैं। पूज्य गुरूदेव तथा मानव मंदिर मिशन के सेवा-कार्यों के साथ आप वर्षों से अनन्य भाव से जुड़े हैं। दादर में ऋषभ टावर में खजांची जी के सुपुत्र श्री उत्तम जी शशिबाई खजांची के आवास पर आचार्यवर का प्रवास रहा। बहुत विवेकशील तथा संस्कारवान परिवार है। इस प्रकार मुम्बई की अष्ट-दिवसीय, धर्म-यात्रा सपन्न कर पूज्य गुरूदेव नौ जनवरी पुनः दिल्ली पधार गए।

जैन आश्रम नई दिल्ली पूज्या प्रवर्तिनी साध्वीश्री मंजुलाश्री जी अपनी सहयोगी साध्वियों के साथ सानंद विराजमान है। मानव मंदिर गुरूकुल तथा सेवा-धाम हॉस्पिटल की प्रवृत्तियां नियमित चल रही हैं। सर्दी की छुट्टियों में गुरूकुल के छात्रों में मंत्र-पाठ, ध्यान तथा योगाभ्यास विशेषतः रहा। चौदह जनवरी मकर संक्रान्ति पर पूरा गुरूकुल तथा स्टाफ-सदस्यों ने वृन्दावन भूमि तथा आगरा ताजमहल परिभ्रमण का आनंद लिया।

हिसार में साध्वी चांदकुमारी जी, साध्वी दीपांजी तथा साध्वी सुभद्राजी (बाई महाराज) सुख-शांतिपूर्वक विराजमान हैं। आपकी देखरेख में मानव मंदिर भवन का कार्य प्रगति पर है। पूरे उत्साह और श्रद्धा-भावना से हिसार-समाज अपनी सेवायें दे रहा है। यथा समय पूज्यवर का हिसार तथा सुनाम-पदार्पण होना है।

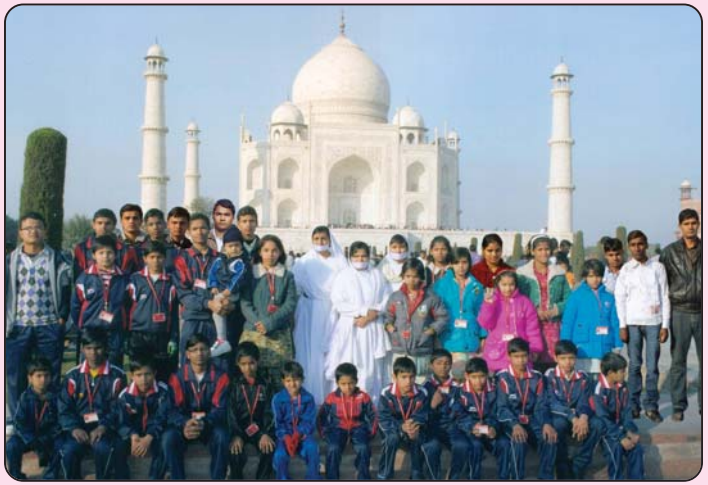

-विश्व के सात अजुबे में से एक ताजमहल के सम्मुख खड़ी हैं साध्वी समताश्री जी, साध्वी वसुमती जी, साध्वी पद्मश्री जी और साथ में है मानव मंदिर गुरुकुल के छात्र-छात्राएं व कार्यकर्त्तागण।

-मानव मंदिर, दिल्ली परिसर में क्रिसमस के मौके पर देश-भक्ति के धुन पर थिरकते मानव मंदिर गुरुकुल के छात्र-छात्राएं व कार्यकर्त्ता।

-श्री शांतिनाथ जैन मंदिर दादर में पूज्य गुरूदेव मंगलाचरण करते हुए। मंदिर हाल में भाव-विभोर होकर पूज्यवर का प्रवचन सुनते हुए जन-समुदाय।

-श्री दलाई लामा के प्रधान मंत्री श्री रिपोचेजी के साथ विचार-विनिमय करते हुए पूज्य आचार्यश्री जी।

-पूज्यवर के साथ समाज-सेवी श्री सोहनराज जी खजांची तथा सौरभ मुनि।

-जुहू बीच पर नव-निर्मित मोदी-निवास पर सर्व-धर्म-सभा में (बायें से) अजमेर दरगाह के दीवान जी, श्री बी.के. मोदी जी, प्रवचन करते हुए पूज्य आचार्यश्री, ब्रम्हाकुमारी जी, इस्कान के महामंत्र दास जी, शंकराचार्य श्री दिव्यानंद तीर्थ जी, परमार्थ आश्रम के प्रमुख स्वामी चिदानंद सरस्वती जी।

-सायं सिन्धु आरती के समय जुहू तट पर (बायें से) साध्वी भगवती जी, श्री मालेकर जी, सुप्रसिद्ध गायिका श्रीमती अनुराधा पौडवाल, स्वामी चिदानंदजी, श्री बी.के. मोदी जी, सौरभ मुनि, पूज्य गुरुदेव, अरूण तिवारी तथा जन-समुदाय।